संगम साहित्य—संस्कृत साहित्य के अतिरिक्त तमिल साहित्य से भी प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी मिलती है। तमिल साहित्य में **संगम साहित्य** का विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है। इस साहित्य का विकास 3-4 शताब्दियों में हुआ। इसका काल ईसा की प्रथम चार शताब्दियों को माना जाता है। संगम साहित्य का एक बड़ा भंडार उपलब्ध है। संगम साहित्य में प्रमुख हैं **एतुतोकई** (Ettuttokai), **पुरननुरू** (Purananuru), **पतुपत्तु** (Pattuppattu) तथा **शिलापदिकारम्** (Silappadikaram)। इस साहित्य में दक्षिण के तीन प्रमुख राजवंशों—पांड्य, चोल और चेर—के आरंभिक इतिहास का उल्लेख मिलता है। राजनीतिक इतिहास के अतिरिक्त सामाजिक व्यवस्था और आर्थिक प्रगति, विशेषकर उद्योग-धंधे और विदेशी व्यापार के विकास पर भी संगम साहित्य से महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। यह साहित्य धर्म निरपेक्ष है। इसमें दक्षिण भारत के अनेक राजाओं और उनकी उपलब्धियों का उल्लेख मिलता है तथापि राजनीतिक इतिहास से अधिक महत्त्वपूर्ण जानकारी सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था के विषय में मिलती है।

2.1(b). विदेशी यात्रियों के विवरण *(Foreign Travellers' Accounts)*

भारतीय साहित्य के अतिरिक्त विदेशी साहित्य भी भारतीय इतिहास के पुनर्निमाण में सहायता प्रदान करता है। इन ग्रंथों की महत्ता इसलिए बढ़ जाती है, क्योंकि अधिकांश भारतीय साहित्य

Scanned with CamScanner

की निश्चित तिथि तय करना दुष्कर है। इन ग्रंथों में तिथिक्रम का सर्वथा अभाव पाया जाता है। साथ-ही-साथ, चूँकि अधिकांश ग्रंथ धार्मिक भावना या किसी निश्चित उद्देश्य से प्रेरित होकर लिखे गए थे, इसलिए वे पूर्णतः निरपेक्ष नहीं हैं। फलतः, इनसे सही स्थिति की जानकारी नहीं मिल पाती। ऐसी स्थिति में हमें विदेशी यात्रियों के विवरणों की तरफ ध्यान देना पड़ता है। वे यात्री निश्चित समय में भारत आए, उन्होंने यहाँ की व्यवस्था को स्वयं देखा और उसका वर्णन किया। अतः, अनेक त्रुटियों के बावजूद ये ग्रंथ तिथिक्रम के आधार पर ज्यादा प्रामाणिक प्रतीत होते हैं। भारत के संबंध में जिन विदेशियों ने लिखा है उनमें ईरानी, यूनानी, रोमन, चीनी, तिब्बती, अरब एवं मुसलमान यात्रियों और लेखकों के विवरण महत्त्वपूर्ण हैं।

ईरानी, यूनानी एवं रोमन वृत्तांत—भारत का विदेशों से प्राचीन काल से संबंध रहा है। सिंधुघाटी की सभ्यता के समय से ही भारतीयों ने विदेशों से संबंध स्थापित कर लिए थे, परंतु इस तथ्य की पुष्टि के लिए हमारे पास पुरातात्त्विक प्रमाणों के अतिरिक्त साहित्यिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। बाद में ईरान और यूनान से भारत के संबंध बने। इनकी पुष्टि साहित्यिक स्रोतों से होती है। यूनानी इतिहासकार हेरोडोट्स के विवरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यूनानियों के प्रभाव में आने के पूर्व ही भारतीय ईरान के संपर्क में आ चुके थे। हेरोडोट्स के अनुसार डेरियस प्रथम ने फारस के एक यूनानी सैनिक स्काइलैक्स को सिंधु नदी के मार्ग का पता लगाने को भेजा था। उसने सिंधु नदी से ईरान तक के जलमार्ग को खोजा। इससे प्रेरणा लेकर हिकेटिअस मिलेटस नामक दूसरे यूनानी लेखक ने एक भूगोल की पुस्तक लिखी, जिसमें सिंधुप्रदेश का प्राचीन विवरण उपलब्ध है। अपनी **हिस्टोरिका** में भी हेरोडोट्स भारत का विवरण किया है। इसी प्रकार केसिअस के विवरणों से भी भारत के विषय में जानकारी मिलती है।

सिकंदर के भारत-आक्रमण के समय अनेक यूनानी लेखक भारत आए जिन्होंने यहाँ की स्थिति के विषय में लिखा। वस्तुतः, भारत पर सिकंदर के आक्रमण की बात इन्हीं लेखकों से ज्ञात होती है। भारतीय ग्रंथों में तो इसका उल्लेख ही नहीं मिलता। इन लेखकों के मूल लेख उपलब्ध नहीं हैं, परंतु बाद के ग्रीक और लैटिन साहित्य में इनका उल्लेख मिलता है। ऐसे लेखकों में अरिस्टोबुलस, निआर्कस, चारस, यूमेनीस, ओनेसिक्रिटस इत्यादि प्रसिद्ध हैं। अरिस्टोबुलस ने **हिस्ट्री ऑफ दि वार** *(History of the War)* नामक पुस्तक लिखी। ओनेसिक्रिटस ने **सिकंदर की जीवनी** लिखी।

Scanned with CamScanner

सिकंदर के पश्चात भी अनेक यूनानी और रोमन लेखकों ने भारत पर लिखा। इन लेखकों में सबसे प्रसिद्ध सेल्यूक्स निकेटर का राजदूत **मेगास्थनीज** था। वह चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में (पाटलिपुत्र) आया और बहुत दिनों तक यहाँ रहा। अपनी पुस्तक **इण्डिका** (Indica) में उसने पाटलिपुत्र नगर, राजा के व्यक्तिगत जीवन, प्रशासनिक व्यवस्था एवं भारत की तत्कालीन अवस्था का वर्णन किया है। यद्यपि इस ग्रंथ में अनेक अतिशयोक्तियाँ हैं, तथापि चंद्रगुप्त मौर्य के समय की अच्छी जानकारी इससे मिलती है। दुर्भाग्यवश **इण्डिका** अपने मूलरूप में उपलब्ध नहीं है। बाद के लेखकों के उद्धरणों के आधार पर इसका संकलन संभव हो सका है। अन्य लेखकों में (यूनानी और रोमन) स्ट्रैबो, डायोनीसियस, कर्टियस, डायोडोरस सिकुलस, पोलिविअस, प्लिनी, टॉलेमी इत्यादि के नाम महत्त्वपूर्ण हैं। प्लिनी ने **प्राकृतिक इतिहास** *(Natural History)* और टॉलेमी ने **भूगोल** *(Geography)* लिखी। ईसा की पहली शताब्दी में एक अज्ञात नाविक ने **पेरिप्लस ऑफ दि एरिथ्रियन सी** *(Periplus of the Erythraean Sea)* नामक पुस्तक लिखी, जिससे भारत का पश्चिमी जगत से व्यापारिक संबंध स्पष्ट होता है।

चीनी एवं तिब्बती लेखकों के विवरण—यूनानी और रोमन यात्रा-वृत्तांतों के ही समान चीनी एवं तिब्बती विवरणों से भी भारतीय इतिहास की जानकारी मिलती है। शुमाचीन प्रथम चीनी लेखक है, जिसके लेखों से भारत के विषय में जानकारी मिलती है। दूसरा प्रसिद्ध चीनी लेखक फाहियान है। वह 399 ई० में भारत आया। भारत में वह लगभग 15 वर्षों तक रहा। इस दौरान उसने भारत के प्रमुख बौद्ध विहारों का भ्रमण किया। चीन वापस लौटकर उसने अपनी यात्रा को लिपिबद्ध किया *(The Travels of Fa-hien)*। फाहियान के विवरण से गुप्तकालीन इतिहास, सभ्यता और संस्कृति की अच्छी जानकारी मिलती है। दूसरा प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग या युवान-च्वांग था, जो 629 ई० में भारत आया। उसने भी भारत के प्रसिद्ध

Scanned with CamScanner

बौद्ध केंद्रों का भ्रमण किया। **पाश्चात्य संसार के लेख** *(Records of the Western World)* नामक पुस्तक में उसने अपनी यात्रा का विवरण प्रस्तुत किया है। सातपीं शताब्दी के भारतीय इतिहास और संस्कृति, विशेषकर हर्षवर्द्धन की जीवनी, उसके कार्यकलाप, प्रशासनिक, धार्मिक, शैक्षणिक व्यवस्था आदि पर इस ग्रंथ से अच्छा प्रकाश पड़ता है। बाद में हुईली ने **युवानच्वांग की जीवनी** (*The Life of Hsuan-Tsiang*) लिखी। इससे भी सातपीं शताब्दी के भारतीय इतिहास की जानकारी मिलती है। बाद में इत्सिंग भी भारत आया। अन्य अनेक चीनी यात्री भी भारत आए। इनके विवरण भारत के विषय में बहुमूल्य जानकारी उपलब्ध कराते हैं।

चीनी यात्रियों के ही समान तिब्बती यात्रियों के विवरण भी भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायक सिद्ध होते हैं। तिब्बती लेखकों में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान लामा तारानाथ का है। उसकी पुस्तक **बौद्धधर्म का इतिहास** *(History of Buddhism)* पूर्व-मध्यकालीन भारतीय इतिहास के अध्ययन का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। धर्मस्वामी के विवरणों से भी तेरहवीं शताब्दी के इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। उसके विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि तेरहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भी नालंदा महाविहार पूरी तरह नष्ट नहीं हुआ था। तत्कालीन राजनीतिक इतिहास पर भी धर्मस्वामी के यात्रा-वृतांत से प्रकाश पड़ता है।

अरब एवं मुसलमान लेखकों के विवरण—8वीं शताब्दी में अरबों की सिंध पर विजय के पश्चात भारत का अरब संसार से संबंध बढ़ गया। अनेक व्यापारी, यात्री अब भारत आने लगे। उनलोगों ने भारत का वर्णन अपने लेखों में किया। तुर्की आक्रमण के समय से अनेक मुसलमान लेखक भी भारत आए, जिन्होंने यहाँ की स्थिति का वर्णन किया। ऐसे लेखकों में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान अलबेरूनी का है। उसने **तहकीकेहिंद** *(Tahqiq-i-Hind)* में ग्यारहवीं शताब्दी के भारत का अच्छा वर्णन किया है। अलबेरूनी के अतिरिक्त अल-बिलादुरी, सुलेमान, मिनहाजुद्दीन, अलमसूदी, फरिश्ता और मार्कोपोलो के विवरणों से भी पूर्व-मध्यकालीन भारतीय इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है।

Scanned with CamScanner